चिलहरी

डूमरॉव से प्रताप सागर होकर बक्सर तक जाने वाली सड़क को एक तरह से पक्का ही कहा जा सकता था. गोकि गर्मियों मे वो धूलों से सनी होती थी और वर्षातों मे कीचड़ से. फिर भी तांगे वाले अपनी सवारियों को डेढ घन्टे मे प्रताप सागर पहुँचा ही देते थे। इनके घोड़े सिर्फ तांगों मे ही नही जोते जाते थे. बल्कि शादी व्याहों मे ये सज धज कर दूल्हों को अपनी पीठों पर बिठाए द्वारपूजा के लिए भी ले जाते थे।
इनके मालिक गॉवो के कोयरी तबके के लोग थे। ये अपने घोड़ों से उतना काम नही लेते थे। डूमरॉव से प्रताप सागर की दो चार खेपें लगवा कर इन्हे अपनी मड़ई के सामने बॉध देते थे। खाने पीने की न तो इन्हे किसी बात की किल्लत थी और न इनके घोड़ों को ही।
प्रताप सागर मे एक बहुत ही बड़ा और आधुनिक मेथोडिस्ट हॉस्पीटल था. जहॉ हर तरह की बीमारियों का इलाज होता था. पर विशेषकर यहॉ टी बी के ही मरीज आते थे। इस हॉस्पीटल का सारा एडमिनिस्ट्रेशन एक जर्मन मिशन के हॉथ मे था। जर्मनी के कई डाक्टर्स और नर्से भी यहॉ काम करती थी। हॉस्पीटल के ही अहाते मे इनके रहने के लिए बॅगले बने हुए थे। अहाते मे एक चर्च भी था।
मैने सुन रखा था कि इन मेथोडिस्टों को ये सारी जमीने डूमरॉव के राजा से दान मे मिली थी। जिस सागर के नाम पर इस जगह का नाम प्रताप सागर पड़ा था. वो कोई सागर नही. बल्कि एक बड़ी सी वर्षाती तालाब थी। इस तालाब मे राजा की ही एक छोड़ी हुई मछली भी तैरती थी जिसके निचले जबड़े मे छेद करवा कर वो उसे खरे सोने की एक मोटी सी नथ पहना रखे थे। अब ये तालाब मेथोडिस्ट हॉस्पीटल के अहाते मे थी। इसके चारो ओर पक्के पाट बने हुए थे। हॉस्पीटल के अहाते मे आने के बाद ऐसा लगता था जैसे इन्सान किसी एक छोटे से सजे सजाये शहर मे आ गया हो। न यहॉ किसी तरह की धूल थी न कोई कीचड़। पक्के शीशेदार मकान. सफेद सिमेन्टों मे ढाली गई सड़के. एक से एक नक्काशीदार लैम्प पोस्टस. खूबसूरत पार्क्स. लोहे की बनी बेंचें। जब अन्धेरा दूर दूर तक फैले गॉवो को अपनी गोद मे समेटने की तैयारी करता रहता था. तो ये इलाका बिजली के प्रकाश मे नहा उठता था।
विदेशियों के अलावे इस हॉस्पीटल मे काम करने वाले दूसरे लोग कन्वर्टेड क्रिस्चियन्स थे। अहाते मे इनकी अपनी दुनिया थी। ये अपने ही ढंग से रहते थे. अपने ढंग से खाते थे. अपने ढंग से पहनते थे।
डूमरॉव के राजा का इन्हे संरक्षण तो मिला हुआ था ही. आए दिन इन्हे उनके डूमरॉव वाले महल मे खानो की दावतें भी मिलती थी. पर हर ऐरे गैरे नत्थूओं को नही. बल्कि बड़े विदेशी डाक्टरों को. चर्च के पादरी को या फिर मैनेजिंग कमिटी के मेम्बरानों को। ये सभी विदेशी गोरी चमड़ी के लोग होते थे जिनमे कई महिलायें भी थी। जब ये अपनी विदेशी चमचम करती गाड़ियों मे बैठे हॉस्पीटल के गेट से बाहर आते थे तो जनसमुदाय सॉस रोक कर अपनी टकटकी बॉध लेता था। दुर्भाग्यवश इनकी गाड़ियों के रंगीन शीशे चढे होते थे जिसकी बजह से इन विदेशी देवी देवताओं के दर्शन सुलभ नही हो पाते थे।
पहला सम्मान इन विदेशियों को ही मिला हुआ था। दूसरे नम्बर पर कन्वर्टेड क्रिस्चियन पर थोड़ी साफ रंग की नर्से थी। तीसरे नम्बर पर काली नर्से फिर दाईयॉ या दूसरे लोग।
मरीजों की कोई कमी नही थी। शाहाबाद जिले से ही नही. बल्कि पटना. गया बलिया इत्यादि जिलों के मरीज भी यहॉ अपना इलाज करवाने आते थे। अस्पताल के कमरों से लेकर बरामदे तक मे तिल तक रखने की जगह न होती थी।
डूमरॉव के दानी राजा रूपये पर रूपये तहियाये जा रहे थे और चर्च का पादरी अपने दूतों और संस्थाओं के जरिये अपने धर्म का प्रचार किए जा रहा था। समीपवर्ती गॉवों के चमटोलियों मे थोमस. मार्टिन या मैथ्यूस जैसे नाम आये दिन सुनने को मिलने लगे थे।
हॉस्पीटल के ठीक सामने शुरू के दिनो मे दुकाने गुमटियॉ या झुग्गियॉ खुलने या बसाने न दी गई. पर इस वेग को न रोका जा सका। अब ये हाल था कि पान बिड़ी की कई गुमटियॉ सरक सरक कर हॉस्पीटल के मेन गेट तक जा पहुँची थीं। यहॉ तक कि जब मेन गेट खुलता था तो इन गुमटियों के सामने अडा मारे गाहकों को खदेड़ना पड़ जाता था। इन गुमटी वालों का वश न चला. वरना ये अपनी गुमटी बढा कर ऑपरेशन हॉल तक ले गए होते।
हॉस्पीटल के सामने एक अच्छी खासी देशी वस्ती ही बस गई थी। गुमटियों के अलावे दूसरी दुकानें कच्ची थीं। दो चार छतें खपरैल की थी. बाकी सूखे पुआलों की. पर सभी दुकानो के सामने बॉस की खोमचियों पर बोरे की तिरपाले टंगी थी। इन तिरपालों के नीचे बैठने के लिए आम की लकड़ी की बनी ब्रेन्ची गाहको से भरी रहती थीं। इन दुकानों पर औंटे भैंस के दूध की चाय. हर तरह की मिठाईयॉ पूड़ी. कचौरियॉ. कटहल और कोंहड़े की सब्जियॉ पूरवों और पत्तलों मे परोस कर दी जाती थी। अगर धूल धक्कड़ कीचड़ और मक्खियों को भूला दिया जाय तो यहॉ के खानो के स्तर को बेहद ही उम्दा कहा जा सकता था।
ऐसे ही किसी दो झुग्गियों के बीच से एक कच्चा रास्ता चिलहरी नाम के एक गॉव तक जाता था। दस कदम चलने के बाद ही रास्ते के दॉई ओर बिज्जू आमों का एक बाग था. जहॉ सप्ताह मे तीन दिन एक मेला लगता था। मेले मे बिन्दी. टिकूली. चूड़ियॉ. नेल पालिश. प्लास्टिक की चप्पलें. साड़ियॉ चोलियॉ और न जाने कौन कौन से सामान फटी पुरानी चादरों पर फैला कर बेची जाती थीं। पूरा बाग कम या बड़ी उम्र की औरतों और लड़कियों से खचाखच भरा होता था।
रास्ते के बॉई ओर इन मेथोडिस्टों का ही हाई स्कूल की पक्की बिल्डिंग बन रही थी। इन्हे ये जमीन चिलहरी गॉव के कुछ निस्वार्थ काश्ताकारों से मिली थी। सैकड़ो मजदूर काम पर लगाए गए थे।
थोड़ा आगे बढते ही गॉव का प्राइमरी स्कूल था। पक्की इमारत. पक्का बरामदा. छ कमरें खिड़की दरवाजों के साथ. यहॉ तक कि तीसरी से पॉचवीं क्लासों के कमरों मे डेस्कें भी थी। पहली और दूसरी क्लास के बच्चों को चटाईयों पर बैठना पड़ता था। स्कूल के सामने एक छोटा सा मैदान था जहॉ क्यारियॉ बना कर गेंदे के फूल रोपे गए थे। इस मैदान मे एक चॉपा कल भी था।
रास्ते के एक ओर नान्ह जात वालों की झुग्गियॉ और कच्चे घर थे। दूसरी ओर दूर दूर तक बस नंगे खेत थे।
रास्ते के दूसरे मोड़ पर ही एक मंदिर था जिसकी छत पर हर दिशा मे अपना मुँह किए पालथी मारे चार जटाधारी तपस्वियों की मूर्त्तियॉ थी। मंदिर मे राम और सीता की काले पत्थरों की मूर्त्तियॉ खड़ी थीं। सीता जी सिन्दूर मे नहाए खड़ी थीं। राम के सीने पर न जाने किन किन रंगों की कितनी जनेवें चढी थीं।
इस मंदिर के राम और सीता के चरण ही नही. बल्कि कमरे और बरामदे तक गाय के खॉटी दूध से धोए जाते थे और वो भी रोज।

इसी मंदिर के सामने बाबू जगबन्द बिहारी राय का एक ऊँची डीह पर बना अधकच्चा पुश्तैनी मकान था जिनकी छतें खपरैल की थी। गॉव की आधे से ज्यादे जमीन उन्ही की थी। वो चार घोड़ियॉ भी पाले हुए थे। उनके अपने घर पर ही दस मजूर खटते थे और खेतों मे तो सैकड़ो ही। तीस हलों की खेती वो अपने हॉथ मे ले रखे थे। बाकी सब अधिया पर दे रखे थे। चिलहरी के तीन आमों के बड़े बड़े बाग उन्ही के थे। दसों गायें बीस से ऊपर भैसें। पनाले मे मैले की जगह दूध बहता था। लक्ष्मी अपने दोनो हॉथों से उन पर असर्फियॉ लुटाये जा रही थीं।
जब वो अपनी किसी घोड़ी पर बैठे अपनी दुनाली लटकाये अपने खेतों के मुआयने पर निकलते थे तो वो किसी राजा से कम न दिखते थे। ऐसे भी उन्हे राजा डूमरॉव का दाहिना हॉथ कहा जाता था। राजा डूमरॉव के खिलाफ जब कभीं कहीं भी बगावत की बात उठी नही कि बाबू जगबन्द बिहारी राय अपनी दुनाली लटकाए घोड़ी पर सवार। उनकी एक कौल पर पूरा चिलहरी गोजी, बरछी, गड़ॉसा लिए कूच करने को तैयार हो जाता था। आखिर क्यों नही!मरने जीने, शादी व्याह, पर्व त्यौहार, आगमन विदाई पर किसका साथ जगबन्द बिहारी राय न दिए!किसे उन्होने खाली हॉथ अपने बईठके से वापस भेजा!
अपने गॉजे का दम लगाने के बाद वो अपना हॉथ जोड़े भगवान से बस एक ही प्रार्थना करते थेःदू बार बियाह कईली। न राम अईलॅ न भरत। अगर आप कहत हई त सुमितरा के भी ले आईब। तब त आप कम से कम एक ठे लखन लाल क दरसन करवा ही देंही। आप क बन्दा जगबन्दा निसपूत आपन ऑख बन्द ना करिहें। अगर आप क बिचार ह त एक सिरंगी मुनि के ही भेज दिहिं। ऊ बोलहिं त मनन खॉटी दूध क खीर बनवा के हम परातन मे अपने घर वालियन के बीच मे बॉट देब। हे हमार देवता!कब तक निसपूत हमके राखब!
ःदो बार मैने शादी की। न तो राम आये और न भरत ही। अगर आप कहें तो सुमित्रा को भी ले आऊँ। तब तो आप मुझे कम से कम एक लखन लाल का दार्स्न तो करवा ही देंगे। आप का ये भक्त निःसन्तान अपनी ऑखें मूँदने से रहा। अगर आप का विचार है, तो एक श्रृंगि ऋृषि को ही भेज दें। अगर वो कहेंगे, तो मै मनो खॉटी दूध की खीर बनवा कर परातों मे अपनी पत्नियों के बीच बॉट दूँगा। मेरे ईश्वर!कब तक मुझे निःसंतान रखोगे!
अचानक उन्हे वशिष्ठ मुनी का ध्यान आया। राजा दशरथ को श्रृंगी मुनि के पास वो ही ले गए थे।
गॉव मे राममंदिर के निर्माण का काम जोर शोर से शुरू हो गया। उन्ही के निर्देश पर मंदिर की छत पर हर दिशा मे अपना मुँह किए पालथी मारे मुनी वशिष्ठ की मूर्त्तियॉ बिठवाई गई। राम और सीता के झालर बालर और गहने आभूषण बक्सर से मॅगवाये गए।
जब मंदिर बन कर पूरी तरह तैयार हो गया तो वो अपनी दोनों पत्नियों रमावती और हीरावती के संग मंदिर के फर्श का एक एक कोना गाय की दूध से धो मारे। मंदिर मे इतना प्रसाद चढा कि पूरा गॉव सप्ताहों तक खोवे के पेंड़े और बर्फियॉ खाता रहा।
भगवान किसकी नही सुनता है!उसने जगबन्द राय की पुकार भी सुनी। उनकी दूसरी पत्नी हीरावती गर्भवती हुई।
बाबू जगबन्द बिहारी राय को जब इस बात का पता चला तो वो अपनी घोड़ी पर सवार हो कर पूरे गॉव का चक्कर मार आए और एक एक घर की कुंडी खड़खड़ा कर उनसे जो भी मिला कह आएःन सिरिफ ई साल खेती क एक एक दाना आप लोगन क ह, बलकि आम अमरूद अउर बॉस सब आप लोगन क ह। गईअन भॅईसन क दूध तक आप लोगन क ह। हमरे घर परतापी राम चन्नर जी पधारे क बिचार मे बॉड़। बस आप लोगन से एकै बीनती ह कि आप सब जन हमरे खातीर पिरारथना।
ःइस वर्ष न सिर्फ खेतों का एक एक दाना आप लोगों का है, बल्कि आम अमरूद और बॉस भी आप ही का है। गायों भैंसों के दूध भी आप के हैं। हमारे घर प्रतापी राम चन्द्र जी पधारने के विचार मे हैं। आप लोगों से मात्र एक ही विनती है कि आप हमारे लिए प्रार्थनाःः
इससे आगे उनसे कुछ भी न कहा जा सका। पूरे गॉव को रूला कर बाबू जगदम्ब राय स्वयम अपनी ऑखों पर ॲगोछी धरे अपने बईठका मे वापस आ गए।
उन्हे एक पुत्र का अभाव तो खलता ही था, गॉव की अशिक्षा भी उन्हे बेहद खलती थी। शायद ही गॉव मे कोई ऐसा होगा जिसे उनका गाया ये गाना कंठस्थ याद न थाः
बिना बिदया के हमारी कछु न बनी।
एक जानी गईलॅ देखे सिलेमा कईलस घोड़ दौड़ाई रामा कईलस घोड़ दौड़ाई
कहें कि ससूरा पईसो लेहलस कईलस जुलुम भारी
लगलॅ देवे सौ सौ गारी कछु ना बनी
बिना बिदया के हमारी कछु न बनी।
उन्ही के बनाये गॉव के प्राथमिक विद्दयालय मे उनके एकमात्र सपूत छैल बिहारी बिना अपनी काने उमेड़वाए पॉचवी कक्षा पास कर के बक्सर मे ऊॅची शिक्षा प्राप्त करने गए। एक लॉज मे उनकी सेवा मे दो नौकरों की सेवा और सुरक्षा भी उन्हे दी गई। गल्ला वगैरह गॉव से ही जाता था।
पैसे वगैरह के मामले मे जगदम्ब राय बेहद सचेत थे, पर उनकी पत्नियॉ नही। छैल बिहारी की बलिहारी ले लेकर वो उनके जेबों मे इतने रूपये ठूॅस देती थी कि उनका पूरा रास्ता उन्हे तहियाने मे ही कट जाता था।
बक्सर मे उन्हे पहला चस्का फिल्मों का लगा। जो फिल्म उन्हे पसन्द आ जाती थी, रोजाना ही जाकर देख आते थे। दूसरा चस्का उन्हे रंगदारी का लगा। जिससे भी थोड़ी खटपट हुई नही कि वो हॉथ छोड़ बैठते थे। यार दोस्त भी उनके ठीक ठाक बन गए थे। दवा के गफलिया जमती थी।
ठेलम ठेल करते वो हायर सेकेन्ड्री मे जा पहुॅचे थे। सिगरेट की उन्हे लत लग ही चुकी थी और जब खाने पर मीट बनता था तो वो व्हिस्की का अद्धा पऊवा भी मॅगवा लेते थे।
सब कुछ के बावजूद दंड बैठकी से वो अपना जी कभी न चूराये। कद उन्हे बाप से मिला था और रंग अपनी मॉ से। जब वो अपने सिल्क के कुर्त्ते पैजामे मे प्रताप सागर बस से उतरते, पूरे प्रताप सागर की नजर उन पर टिक जाती थी। गले मे सोने की मोटी चैन, कलाई पर गोल्ड प्लेटेड घड़ी चमड़े की गद्देदार चप्पल, लोमा तेल से चूपड़ी करीने से कढे उनके घूॅघराले बाल और ऊपर से शेरों जैसी चाल।
हायर सेकेन्ड्री उनके लिए किसी आई ए एस के एक्जाम से कम न था। चूटकेबाजी की उन्हे खुली छूट थी फिर भी वो दो बार लुढकनिया मार चुके थे। दूसरी ओर तिलकहरूओं ने जगदम्ब राय का जीना हराम कर रखा था और खास करके डूमरॉव के राजा के मैनेजर सुग्रीव सिंह ने। कहने को वो राजा के मैनेजर थे, पर उनकी अपनी हैसियत जगदम्ब राय से किसी मामले मे कम न थी।
दूसरों को तो टाला जा सकता था पर उन्हे नही। एक तरह से जगदम्ब बिहारी उन्हे अपनी जुबान दे रखे थे। बस छैल बिहारी के हायर सेकेन्ड्री के

पास किए जाने का इन्तजार हो रहा था।
वो तीसरी बार भी फेल हो गए। अब जगदम्ब राय को उनके बक्सर की गृहस्थी समेटवानी पड़ गई। छैल बिहारी अब हमेशा के लिए चिलहरी आ गए।
जगदम्ब राय को पता था कि वो अपने छैल छबीले बॉके सपूत के हॉथों मे एक मेहरी सौंपने जा रहे है पर उन्हे ये भी पता था कि उन्हे राजा जनक जैसा समर्थ समधी मिलने जा रहा है और घर मे सोने से लदी एक सीता आ रही है।
तिलक चढ चुका था जिसमे सुग्रीव सिंह ने अपनी गंगा के तट पर बक्सर वाली कोठी अपनी बेटी और दामाद के नाम लिख गए थे। ये तो महज मामूली सा प्रारम्भ था। जाने से पहले वो जगदम्ब राय से गले मिल कर ये भी कह गए थेः जब बारात लाईएगा तो कम से कम बीस बैलगाड़ियॉ खाली ही लाईएगा और साथ मे एक ड्राईवर लाना न भूलिएगा।
चिलहरी से तेरह कोस दूर एक गॉव था सूलेमन. वहीं सुग्रीव सिंह की पुश्तैनी जमीने थी जिनकी देख भाल उनके छोटे भाई करते थे। बारात सूलेमन ही जानी थी।
चिलहरी के एक से एक चूनिन्दे बैल गाड़ियों मे जोते गए। टायर वाली गाड़ी मे जगदम्ब राय के कान्हर और दिलदार नाम के बैल जोते गए। उन्हे भी झालर पहनाया गया. उनके सिंघ सिन्दूर और कड़वे तेल से रंगे गए। गले मे मोटे मोटे मोतियों की मालायें पहनाई गई। गाड़ी को गेंदे के फूलों की मालाओं और अशोक के पत्तों से सजाया गया। बग बग सफेद तोशक बिछाया गया।
छैल बिहारी अपने मामा के एक दस वर्षीय लड़के के साथ गाड़ी मे बैठ गए। सभी बाराती अपनी अपनी गाड़ियों मे बैठ चुके थे। बस जगदम्ब राय का इन्तजार हो रहा था। जब वो अपने दालान से बाहर निकले. तब टायर वाली गाड़ी मे जूते बैलों को काबू मे रखना मुश्किल हो गया।
बावन बरस के जगदम्ब राय के कन्धे पर पड़ा सफेद रेशमी चादर और उनका काला पम्पशू उन पर बड़ा ही फब रहा था। ऊपर से उनकी ऐंठी मूछ और बीच से कढी मॉग।
टायर वाली गाड़ी मे वो ढंग से बैठ भी न पाए थे कि गाड़ी दौड़ पड़ी। उनके पीछे एक सौ बीस बैलगाड़ियॉ थी। बीस बैलगाड़ियॉ खाली थी। दस गोजी बरछी और गड़ॉसों से लदी थीं और दस खाने पीने के सामानो से। बाकी पर बाराती बैठे थे।
टायर वाली गाड़ी से बंधा एक सजा सजाया सफेद नस्ली घोड़ा भी दुलकियॉ मार रहा था। उसका नाम अलबेला था।
मंदिर के बगल से ही सारी बैलगाड़ियॉ खेतों की ओर मुड़ गई।
चिलहरी मे रह गए बस बूढे बीमार या फिर नीचे तबके के लोग और औरतें जो धूलों मे नहाए बैलगाड़ियों के जाते काफिले को तब तक देखते रहे जब तक कि वो नजरों से ओझल न हो गए।
अब तीसरे दिन इनकी वापसी थी।
सूलेमन गॉव मे बारातियों की भर पूर सेवा की गई। गॉव के बूढे बच्चे जवान सभी कन्धे से कन्धे लगा कर बारातियों की सुख सुविधा के पीछे जूटे रहे। खाने पीने सोने का बड़ा उचित इन्तजाम था। बारातियों को आम के बागों मे तने शामियानो मे ठहराया गया था। उनके मनोरंजन के लिए दो भॉड़ मंडलियॉ बुलवाई गई थीं और साथ मे शाहजहॉपुर की तीन बाईयॉ भी। सुग्रीव सिंह ने दबा के पैसा बहाया।
जब तीसरे दिन बारात वापस आई तब छैल बिहारी राय अपनी पत्नी और सहबल्ले के संग टायर वाली गाड़ी मे खेतों के रास्ते चिलहरी वापस न आए. बल्कि प्रताप सागर वाले रास्ते से एक सफेद नई एम्बेस्डर मोटर मे. जिसे चिलहरी का ही एक मुसलमान लड़का चला रहा था। पूरे गॉव मे यही एक बन्दा था जिसे मोटर चलाना आता था और चिलहरी मे छैल बिहारी की मोटर पहली मोटर थी।
मोटर के अलावे बैलगाड़ियों पर दहेज का न जाने क्या क्या सामान नही आया। पलन्ग से लेकर सिंगरदान. गोदरेज की अलमारियॉ. फूल के बर्त्तन .कपड़े लत्ते. मिठाईयॉ और न जाने क्या क्या!
इन सब बातों के बावजूद छैल बिहारी अपने को बेहद निर्धन महसूस कर रहे थे। सूलेमन का ही एक मुँहफट जनखा कई दफे ताली बजा बजा के .ऑखें नचा नचा के एक गाने के जरिये उन्हे सब कुछ बता चुका था। इस गाने की पहली पंक्ति कुछ इस तरह थीः तोहरे काली कलूठी के नखरे बड़ेःबड़ा समझा बुझा कर उनकी मामी ने उन्हे अपनी पत्नी के कमरे मे धकेला। सजे सजाये पलंग पर उनकी बी ए पास पत्नी बिना घूँघट के अपना सर अपने घुटनो पर रखे सो रही थी। ऊँची की गई लालटेन की बत्ती के प्रकाश मे वो अच्छी तरह अपनी पत्नी का चेचक के दागों से भरा काली माई का चेहरा देख रहे थे जिसे वे अग्नि की साक्षी मे सात कसमें खा कर साथ लाए थे। सुग्रीव सिंह की कन्या की उपेक्षा या अवहेलना का अन्जाम भी उन्हे पता था।
अब उन्हे उसी मे अपने बैजंती और माला सिन्हा को ढूँढना था जिन्हे वो अपनी जवानी आने से पहले ही अपना दिल दे चुके थे। इनके अलावे वो अपना दिल मेथोडिस्ट हॉस्पीटल मे काम करने वाली अपने से काफी ज्यादे उम्र की एक नर्स को भी दे चुके थे जो जर्मन थी। सफेद स्कर्ट के नीचे झॉकती गोरी पिन्डलियॉ. तनी कसी छातियॉ. सुनहरें बालों पर रखी सफेद तिरछी टोपी फिर उसकी अन्ग्रेजी मे बोली गई हिन्दीःहलो राय साहब!हाऊ डू यू डू!
छैल बिहारी अपनी शाहाबादी हिन्दी तक भूल जाते थेःठीके बानी मेमसाहब।ःठीक ही हूँ मेम साहबः
इसके अलावे ललीता भांड़ मंडली मे नाचने वाला एक लड़का भी उन्हे झकझोरे हुए था. जो समीप के ही गॉव का रहने वाला था और जात का धोबी था। साड़ी ब्लाउज पहन कर जब वो लवन्डर पावडर पोते स्टेज पर आता था तो उसके सामने छैल बिहारी को बैजन्ती माला और माला सिन्हा तक फीके लगते थे। ललीता परसाद हारमोनियम छेड़े नही कि उसकी चौकी तोड़ नाच शुरू हो जाती थी। चौकी का एक एक पाया हिला के रख देता था।
जगदम्ब राय के जीते छैल बिहारी अपनी पत्नी को न तो अपनी नर्स मे ढूँढने से रहे और न अपने धोबी जात लवन्डे मे. पर वो सब कुछ एक साथ गॉव की ही एक ब्याहता अहीरिन मे ढूँढ लिए जो अपने गवने का इन्तजार कर रही थी। उसका बाप भी दूसरे ग्वालों के साथ जगदम्ब राय के गायों भैंसो को दूहता था।
रोजाना वो अपनी पत्नी की कोई तेल या पावडर की शीशी चुरा कर उसके पास जा धमकते थे। उनकी ये रास लीला को पूरा चिलहरी जानता था। अगर कोई न जानता था तो जगदम्ब राय और वो जान भी न पाए।
पास के ही एक गॉव मे वो दो पट्टियों के बीच कोई झगड़ा सुलझाने गए थे। गॉव मे वापस उनकी लाश आई और वो भी खून से लथपथ। उनके

दॉई पंजर मे गोंदा गया बल्लम तक न निकाला जा सका था।
जगदम्ब राय को बस अन्ठावन वर्ष की जिन्दगी मिली थी।
ये इस परिवार पर गिरने वाली पहली गाज थी।
दूसरी गाज तब गिरी जब छैल बिहारी दानापुर मे भाग कर एक ट्रेन पकड़ना चाहे। भींगे हॉथ थे, पकड़ी हैन्डल सख्ती से न पकड़ पाए। उनका एक पॉव प्लेटफार्म से इतना रगड़ा खाया कि डाक्टरों को उसे घुटने से ऊपर काटना पड़ गया। अब उनके पास प्लास्टिक की एक जूते समेत पॉव थी। बिना घोड़ी के उनसे एक कदम तक न चला जाता था।
खेती बाड़ी का काम अभीं भी सुचारू रूप से चल रहा था। जगदम्ब राय की बनी बनाई व्यवस्था थी। वहॉ क्या बदलना था!
जर्मन नर्स अपने कान्ट्रेक्ट के खत्म होने के बाद अपने देश वापस चली गई। अहीरिन का भी गवना हो गया। अब चिलहरी मे ललीता भॉड़ मंडली मौके बेमौके कुछ ज्यादे ही आने लग पड़ी। गॉव वालों को भी क्या ऐतराज हो सकता था!छैल बिहारी के खर्चे पर पूरे गॉव का मनोरंजन हो रहा था।
पूरी मंडली छैल बिहारी के खलिहान वाले दालान मे ही ठहरती थी। इनका खाना भी उन्ही का एक नौकर बनाता था। जब चिलहरी मे आई बारात वापस चली जाती थी तब छैल बिहारी के कहने पर इस मंडली के तीन जन एकाध दिन के लिए चिलहरी मे रूक जाते थे। हारमोनियम मास्टर, ढोलक मास्टर और वो धोबी का लड़का। अब महफिल जमती थी छैल बिहारी के बईठके मे। सुबह से शाम तक ये धोबी का लड़का चूने अश्लील फिल्मी गाने गा गाकर अपने कूल्हे मटकाता था। छैल बिहारी की बईठका पूरे गॉवों के कामुकों से भर जाती थी। हुक्के पानी से लेकर गॉजे तक, पान बिड़ी से ले कर घोड़े रम की पूरी व्यवस्था रहती थी।
इस धोबी के लड़के को अन्यान्य तरीकों से रूपये दिए जाते थे और उसके पास भी अपनी अदायें थीं, शुक्रिया अदा करने की।
पता नही इस तरह के मनोरंजन से लोगों को क्या मिलता था!
ललिता प्रसाद की भॉड़ मंडली के पास गर्मियों मे एक दिन की फुर्सत नही होती थी। आज इस गॉव मे तीन दिन तो कल उस गॉव मे तीन दिन। उनकी हारमोनियन, बसावन नामके जोकर और मटरू धोबी का सुन्दर गला ने पूरे जिले मे तहलका मचा रखा था। हर शादी व्याह मे सबसे पहले इसी मंडली से सट्टा किया जाता था। ठंढ के दिनो मे ये मंडली तरह तरह के नाटकें खेलती थीःरामलीला, शकुन्तला, राजा हरिश्चन्द्र, श्रवण कुमार, दधिचि इत्यादि।
एक बार छैल बिहारी राय के खर्चे पर ये मन्डली आठ दिनो के लिए चिलहरी आई। रामलीला होना था। हर दिन तुलसीदास का एक कान्ड मंचित होना था। ललिता प्रसाद ने राम का अभिनय अपने हॉथों मे ले रखा था और मटरू धोबी को सीता का अभिनय करना था। राम मन्दिर के बगल वाले खुले मैदान मे दस चौकियॉ जोड़ कर स्टेज बनाया गया था। शाम के छह भी न बजते थे कि ये मैदान दर्शकों से खचा खच भर जाता था। जिसे देखो वही अपनी बॅसहटी उठाये इस मैदान की ओर बढा चला जा रहा है। गैसबत्तियों का भी बड़ा उचित प्रबन्ध रहता था। स्टेज के बगल मे एक छोटे से शामियाने के नीचे छैल बिहारी के परिवार के लिए तोशक और मसनद का इन्तजाम रहता था। छैल बिहारी की पत्नी और उनकी दोनो मातायें भी रामलीला देखने आती थीं। मैने अपने जीवन मे पहली बार एक स्टेज पर राम और सीता को मुझे ढंढ लग रही है मुझसे दूर तो न जा की धुन पर नाचते देखा। ललिता प्रसाद वल्कल पहने अपनी जटाजूट बढाये नाचे चले जा रहे थे। मटरू धोबी एक पीली साड़ी पहने अपने कूल्हे लहराये चला जा रहा था और वो भी अश्लील मुद्राओं मे। छैल बिहारी की नज़रें मटरू धोबी पर जा जमती थी।
तीसरे दिन पूरा गॉव सीता के अभिनय मे मटरू धोबी की जगह एक चमार के लड़के को देख कर चौंका। उसकी आवाज भैंसों जैसी मोटी तो थी ही ऊपर से वो कहीं से जनाना नही दिखता था। चिलहरी को बड़ा निराश किया इस चमार के लड़के ने।
लोगों की सुगबुगाहटों से जो भी मुझे पता चला वो ये था। पिछले दिन शाम के किसी वक्त मटरू धोबी के कान मे छैल बिहारी का एक लठैत स्टेज के पीछे फुसफुसा आयाःनाटक खत्म होते ही खलिहान वाले दालान मे ठाकुर साहब इसी साड़ी मे तुम्हारा इन्तजार करेंगे। उनको खुश कर दोगे तो जागीर पाओगे। निराश किये, तो अपना बदन तुड़वाओगे धोबी।
इस शाम मटरू को कोई जागीर तो न मिली, बल्कि छैल बिहारी के लठैतों ने उसका कीमा बना डाला। पीट पिटा कर वो लापता हो गया। ललिता प्रसाद की मंडली के लिए ये एक घोर क्षति तो थी ही, दर्शकों के लिए भी ये एक घोर क्षति थीःगजब का डानस करता था मटरूआ...
एक छोटा सा अरसा ही गुजरा थाः
एक दिन शाम के धूॅधलके मे प्रताप सागर से छैल बिहारी की एक घोड़ी उनकी सरकटी लाश लिए वापस घर आई। घर मे तो कोहराम मचा ही, सारा गॉव शोक मे डूब गया। लाख ढूॅढने पर भी कोसों दूर उनका एक दुश्मन तक ढूॅढा नही जा सकता था। जहॉ तक उदारता की बात थी, वो अपने पिता से भी चार कदम आगे थे। उनके अपने दहेज की मोटर किस दूल्हे के काम न आई!कौन सी शादी मे उन्होने अपना पैसा न लगाया!उनके बक्सर वाली कोठी मे कौन जा कर न ठहरा!चरवाहों और मजूरों की मजूरी कब उन्होने काटी!गॉव के मन्दिर और स्कूल का वो हर साल ही रंग रोगन करवाते रहे। न वो कभीं किसी का निमंत्रण टाले और न किसी का दिल ही तोड़े।
उनका कौन ऐसा जूल्मी दुश्मन हो सकता था!
फिर भी लीलार पर का लिखा कौन मेट पाया है!
बड़े व्यथित मन से छैल बिहारी राय की अर्थी एक ट्रेक्टर पर सजा कर बक्सर ले जाई गई। हजारों अश्रुपूरित ऑखों ने उनसे विदा लिया।
सुग्रीव सिंह के निर्देश पर आसपास के थानो के थानेदारों से लेकर हवलदवार सिपाही तक सक्रिय हुए। हत्यारे का तो पता न चला, पर छैल बिहारी का कटा सर गड़ासे सहित बॉसों के एक जन्गल मे सूखे पत्तों से छुपाया अवश्य बरामद हुआ।
महीनो चिलहरी छैल बिहारी के गुजर जाने के दुख मे रोया और आखिर क्यों न रोता!उनकी दो विधवा मॉओं और अपने खेलने गाने की उम्र मे सुग्रीव सिंह की विधवा बेटी की ये हालत देख कर किसकी ऑखें नम न हो सकती थी!
मुगल सराय से बाम्बे मेल छूटने ही वाली थी कि अचानक एक यही कोई उन्नीस बीस वर्ष का सॉवला सलोना सा लड़का प्लेटफार्म पर जमी भींड़ को चिरता एक डिब्बे मे जा घूसा। वो सफेद रंग का पैजामा और नीले रंग का एक चारखानेदार पायलट कमीज पहने हुए था। अपने सर पर वो एक नीले रंग की गमछी बॉध रखा था। जब ट्रेन चलने को हुई, तो वो टवायलेट के सामने ही फर्श पर अपने सर पर बॅधी गमछी फैलाई और अपना सर अपनी घुटनो मे छुपा कर बैठ गया। पीठ तक लहराते बाल, हॉथों के नाखूनो पर लिपी लाल नेल पालिश, आल्ता से रंगे पॉव। उसके

कानो मे कोई बालियॉ तो न थीं. पर कानो के छेद देखे जा सकते थे। उसे जो कोई भी देखता था. हल्के से मुस्करा देता था। कई तो उससे ये भी पूछ बैठेःक्यो बाई जी!बाम्बे तक का सफर है क्या!

मटरू धोबी का कोई पता आज तक पुलिस न लगा पाई। चिलहरी की खेती गृहस्थी आज के दिनो मे सुग्रीव सिंह की बेटी के हॉथों मे है। सुना है कि वो घोड़ी पर बैठ कर अपने खेतों का मुवायना भी करने जाती हैं।

प्रमोद कुमार सिंह